cpct

Notations :

1. Options shown in green color and with ✔ icon are correct.
2. Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name:	Remington Gail 25th Nov 2017 Shift 1
Subject Name:	Remington GAIL
Creation Date:	2017-11-22 12:14:39
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No

Mock

Group Number :	1
Group Id :	20620566
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	206205102
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	206205102
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 1 Question Id : 206205741 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

बहुत समय पहले की बात है हिमालय के जंगलो में एक बहुत ताकतवर शेर रहता था एक दिन उसने बारासिंघे का शिकार किया और खाने के बाद अपनी गुफा को लौटने लगा अभी उसने चलना शुरू ही किया था कि एक सियार उसके सामने दंडवत करता हुआ उसके गुणगान करने लगा।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Remington
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes

Actual

Group Number :	2
Group Id :	20620567
Group Maximum Duration :	15
Group Minimum Duration :	15
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	0
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	206205103
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	206205103
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 2 Question Id : 206205742 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

आपदा ना केवल हमारे जन-जिवन को बुरी तरह से प्रभावित करता है बल्कि हर साल हजारों जिंदगियों को अपना शिकार बनाता है और करोडों की सम्पत्ति का नुकसान भी करता है। आकडों की बात करें तो पिछले तीन दशक में भारत में चार अरब से भी ज्यादा लोग बाढ से प्रभावित हुए हैं, और हर साल लगभग 1200 लोग बाढ में अपनी जिंदगी गवा देते है। हम अक्सर देखते है की बरसात का मौसम आते ही नदियां उभरने लगती है और हमारे देश के अधिकांश क्षेत्रों में बाढ तबाही फैलाना शुरू कर देती है। हमारी हर सभ्यता का विकास नदियों के पास से ही शुरू हुआ है और जब-जब बाढ अपना विकराल रूप धारण करती है तो नदियों के किनारे बसा जन-जीवन बुरी तरह से प्रभावित हो जाता है, और उस इलाके के हरे-भरे खातों को भी वो अपने चपेट में ले लेता है। भले ही बीते दशकों के मुकाबले पिछले कुछ सालों में बारिश में कमी आई है लेकिन इसके बावजूद बाढ से होने वाली तबाही लगातार बढती जा रही है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के आकडों के अनुसार भारत के 23 राज्य बाढ की दृष्टि से अती संवेदनशील इलाके में आते हैं, वही भौगोलिक दृष्टिकोण से देश का 1/8वां हिस्सा यानी लगभग 40 लाख हेक्टेयर भाग बाढ के दृष्टिकोण से संवेदनशील है, जिसमें से लगभग 8 लाख हेक्टेयर जमीन हर साल बाढ से प्रभावित होती है। हमारे देश में बाढ की समस्या मुख्य रूप से गंगा के उत्तरी किनारे वाले राज्यों में है, जहां गंगा के अलावा यमुना, कोसी, सोन, घाघरा और कई प्रमुख नदिया बहती है जो की उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, बिहार और दक्षिण बंगाल के कुछ हिस्सों में फैली हुई है जिसके किनारे घनी आबादी वाले शहर हैं। इस शहरों की आबादी 40 करोड से भी ज्यादा है जिसका परिणाम है की नदियों के ढलाव क्षेत्र पर दबाव बढता जा रहा है, भूमि साद के रूप में नदी की धारा में ही जमने लग रही है जो की मैदानी इलाकों में नदियों को गहराई को उथला बना दे रही है और इसके फलस्वरूप बरसात का पानी नदी की धारा में मिलने के बजाए आस-पास के इलाकों में बाढ के रूप में फैलना शुरू कर देता है। इसमें कोई दो राय नहीं हो की विकास के नाम पर भूमि को बांधकर रखने वाले जंगल बेतहाशा काटे गए, जहां अब इमारतों ने जगह ले ली है, कई जगह कारखाने और सडकों के जाल ने प्राकृतिक सौंदर्य को अपनी चपेट में ले लिया, जिसके नतीजतन अब इन ढलानों पर बरसने वाला पानी संरक्षित हो कर नदी में मिलने के बजाए क्षेत्र की भूमि को मिनटों में बहा कर ले जाते है, वहां मौजूद जन-जीवन को बुरी तरह से प्रभावित करते हैं।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Remington
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes